भज गोविन्दम्

हे मूर्ख! धन प्राप्ति की तृष्णा को छोड़ो। अपने मन में वासनाओं से रहित अच्छे विचार उत्पन्न करो। सत्कर्मों से उपार्जित धन के द्वारा ही अपने चित्त को प्रसन्न रखो अर्थात् परम सन्तोष धारण करो।

.....

जब तक तुम्हारे अन्दर धन कमाने और बचाने की शक्ति है तभी तक तुम्हारे, आश्रित तुमसे चिपके रहेंगे। पीछे जब तुम बूढ़े हो जाओगे और शरीर निर्बल हो जायेगा तब तुम से कोई भी व्यक्ति बात भी नहीं करेगा।

.....

जब तक इस शरीर में प्राण रहता है, तभी तक लोग आकर कुशलक्षेम पूछा करते हैं। ज्योंही प्राण शरीर को छोड़ता है, शरीर विकृत होने लगता है, और अपनी स्त्री भी उसी शरीर से डरने लगती है।

.....

योग में लीन रहे या भोग–विलास में, साथियों में प्रसन्न रहे या भीड़ से दूर एकान्त में निवास करे, जिसका मन ब्रह्म में लीन है वही प्रसन्न है वही वास्तव में सुखी रहता है।

.....

अपने शत्रु या मित्र से, पुत्र या सम्बन्धियों से झगड़ने में या दोस्ती करने में अपनी शक्तिबर्बाद मत करो। अपने को सर्वत्र; सब जीव और प्राणी में देखो और अज्ञान से उत्पन्न अनेकत्व की भावना को त्याग दो।

.....